साईं

सृजन पटल

मासिक पत्रिका

लेखन और सृजन के उन्नयन के लिए सदैव प्रतिबद्ध

Website : www.sainsrijanpatal.com

MSME Registration No.
UDYAM-UK-05-0103926

वर्ष-2 अंक-11 जून 2025 पृष्ठ-24 निःशुल्क

सम्पादकीय

'चरैवेति चरैवेति' संस्कृत का एक वाक्यांश है जो कि एक प्रेरणादायक मंत्र है। यह निरंतर प्रयास और आगे बढ़ने की सीख देता है। इसी सोच के साथ 'साई सृजन पटल' का ग्यारहवां अंक आपके सम्मुख है। इस अंक में उत्तराखंड की धार्मिक आस्था से जुड़े लेखों बट सावित्री व्रत, देवी वाटिका, पित्र पक्ष और बैरासकुंड को स्थान दिया गया है। उत्तराखंड की धरोहर बुग्याल,लिक्विड ट्री और संरक्षित खेती के आलेख प्रकृति व पर्यावरण प्रेम का संदेश भी देते हैं। महिला सशक्तिकरण की प्रतीक बनी पूनम राणा के कार्य भी सराहनीय हैं। भोटिया जनजाति के वस्त्र और आभूषणों से भी पाठकों को परिचित करवाया गया है। उत्तराखंडी सिनेमा 'मिशन देवभूमि' की समीक्षा निस्संदेह एक अलार्म है। लोकहितकारी परिषद द्वारा सम्मानित मेधावी, 'ढाई आखर' प्रतियोगिता के पुरस्कृत विद्यार्थी,एस.जी.आर.आर.विवि के उत्तम अग्रहरी और गौरादेवी पर्यावरण सम्मान पाने वाले डॉ.पुरोहित पूरे समाज के लिए 'रोल मॉडल' हैं। दिव्यांगता को हराने वाले जीवन चन्द्र जोशी सचमुच सफलता की कहानी लिख रहे हैं। दून विश्वविद्यालय में हिन्दू अध्ययन में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम का शुभारंभ हमारी संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए एक सशक्त कदम है। गैरसैंण में अंतरराष्ट्रीय संसदीय शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान की स्थापना की सराहना की जानी चाहिए। भारत सरकार के पूर्व शिक्षा मंत्री और उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री डा.रमेश पोखरियाल 'निशंक' के 'योग' पर लिखे गये आलेख से भी पत्रिका का मान बढ़ा है। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय के संदेश में उन्होंने 'पत्रिका' के लिए उत्कृष्ट मानदंड निर्धारित किये हैं,जिस पर खरा उतरने के लिए हमारी संपादकीय टीम पूरा प्रयास करेगी।

आपका- डॉ.के.एल.तलवाड़

प्रो. ओम प्रकाश सिह नेगी
कुलपति
Prof. Om Prakash Singh Negi
Vice Chancellor

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
Uttarakhand Open University

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

संदेश

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई है कि साई सृजन पटल, उत्तराखण्ड अपनी मासिक पत्रिका **'साई सृजन पटल'** के जून 2025 अंक का शीघ्र प्रकाशन करने जा रहा है। यह पत्रिका न केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक अद्भुत माध्यम है बल्कि समाज के प्रबुद्धजन, शिक्षक, शोधार्थी व छात्र-छात्राओं के चिंतन और नवाचार का जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत करेगी। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जहाँ शैक्षिक उत्कृष्टता के साथ-साथ रचनात्मक व विचारशीलता का समन्वय आवश्यक है, मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में उत्तराखण्ड के विकास में योगदान देने वाले युवाओं, शोधार्थियों, कलाकारों एवं नवोदित लेखकों आदि एवं जनहित हेतु उत्कृष्ट पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक सामग्री का समावेश किया जायेगा जिससे समाज के सभी वर्ग भी लाभान्वित होंगे। मुझे विश्वास है कि आगामी अंक के प्रकाशित आलेख, शोध पत्र व कलात्मक प्रस्तुतियाँ उत्तराखण्ड के जनसामान्य के लिये सार्थक व लाभप्रद होंगे।

मैं **'साई सृजन पटल'** पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ तथा समस्त साई सृजन पटल परिवार को उनके द्वारा समय-समय पर उनकी रचनात्मक गतिविधियों के आयोजनों के लिए बधाई देता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित,

(प्रो.ओ.पी.एस.नेगी)
16/06/2025

Vishvidhyalaya Marg, Near T.P. Nagar, Haldwani-263139 (Nainital) Uttarakhand
विश्वविद्यालय मार्ग, निकट ट्रान्सपोर्ट नगर, हल्द्वानी-263139 (नैनीताल) उत्तराखण्ड
Mob: 8954043377, Ph-: 05946-263014 Fax: 05946-262032
Website: www.uou.ac.in, E-mail : vc@uou.ac.in

साईं सृजन पटल
मासिक पत्रिका

संपादक/स्वामी/प्रकाशक

प्रो.के.एल.तलवाड़
(सेवानिवृत्त प्राचार्य)
मो.- 9412142822
ई-मेल: sainsrijanpatal@gmail.com
वेबसाईट - sainsrijanpatal.com

उप संपादक

अंकित तिवारी
एम.ए., एल.एल.बी.
मो. 7678117638

सह संपादक

अमन तलवाड़
मो. 7300883189

द्वारा ईजी ग्राफिक्स,
दया पैलेस, हरिद्वार रोड,देहरादून (उत्तराखंड)
से मुद्रित करवाकर 'साईं कुटीर'
आर.के.पुरम, जोगीवाला, देहरादून
(उत्तराखंड) से प्रकाशित

सलाहकार मंडल

डॉ.एस.डी. जोशी, वरिष्ठ फिजिशियन
प्रो. जानकी पंवार (सेवानिवृत्त प्राचार्य)
प्रो. राजेश कुमार उभान (सेवानिवृत्त प्राचार्य)
डॉ. मंजू कोगियाल, असि. प्रो. हिन्दी
डॉ. चन्द्रभूषण बिजल्वाण साहित्यकार

आवरण पृष्ठ

उत्तरकाशी, इनसेट फिल्म में माणा गांव में पाण्डवों की मूर्तियां, योग मुद्रा में सी.एम. पुष्कर सिंह धामी,वैष्णवी लोहनी व कर्णप्रयाग कॉलेज की शालिनी

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में तथ्यों संबंधी विचार लेखकों के निजी हैं, जिनसे प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कुमाऊँ की सांस्कृतिक पहचान
वट सावित्री व्रत की परम्परा

भारत विविधताओं से भरा देश है जहाँ प्रत्येक क्षेत्र की अपनी अलग सांस्कृतिक पहचान, परंपराएँ और लोक विश्वास हैं। उत्तराखंड के कुमाऊँ क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत अत्यंत समृद्ध और गहराई लिए हुए है। यहाँ की लोक परंपराएँ, त्योहार, रीति–रिवाज, लोक संगीत और लोक कथाएँ इस क्षेत्र को विशेष बनाते हैं। इन्हीं में से एक महत्वपूर्ण परंपरा है वट सावित्री व्रत, जिसे विशेष रूप से विवाहित महिलाएं अपने पति की लंबी आयु और सुख–समृद्धि के लिए रखती हैं। यद्यपि यह व्रत भारत के विभिन्न हिस्सों में मनाया जाता है, परंतु कुमाऊँ में यह व्रत अपने विशिष्ट लोक–रूपों, रीति–रिवाजों और सांस्कृतिक महत्व के साथ एक अनोखी पहचान बनाता है। वट सावित्री व्रत की परंपरा की जड़ें महाभारत और पौराणिक कथाओं में मिलती हैं। इसके अनुसार, सावित्री नामक स्त्री ने अपने पति सत्यवान के अल्पायु होने की बात जानने के बावजूद उससे विवाह किया। जब यमराज सत्यवान का प्राण हरने आए, तो सावित्री ने अपनी धर्मनिष्ठा, बुद्धिमत्ता और दृढ़ संकल्प से यमराज को संतुष्ट कर लिया और अपने पति को पुनः जीवनदान दिलाया। इस घटना को स्त्री की निष्ठा, साहस और समर्पण का प्रतीक माना जाता है। इसी कथा के आधार पर यह व्रत मनाया जाता है। कुमाऊँ क्षेत्र में यह व्रत ज्येष्ठ मास की अमावस्या को श्रद्धा और धूमधाम से मनाया जाता है। यहाँ की महिलाएं वट (बरगद) वृक्ष के नीचे एकत्र होकर पूजा करती हैं और पौराणिक कथा का पाठ करती हैं। इस दिन महिलाएं उपवास रखती हैं, पारंपरिक वस्त्र पहनती हैं, मांग में सिंदूर भरकर, चूड़ियाँ और बिछुए पहनकर सुहागिन रूप में सजती हैं। वट वृक्ष के चारों ओर धागा लपेटते हुए 7, 11 या 21 बार परिक्रमा की जाती है।

कुमाऊँ में इस व्रत की पूजा विधि में विशेष लोक रंग देखने को मिलता है। महिलाएं लोकगीत गाते हुए वट वृक्ष की पूजा करती हैं। पूजा में केले, आम, सिंदूर, चूड़ियाँ, मिठाई, धूप, दीप, अक्षत और जल का उपयोग होता है। सावित्री–सत्यवान की प्रतीकात्मक मूर्तियाँ या चित्र बनाकर उनका पूजन किया जाता है। इस अवसर पर महिलाएं समूह में इकट्ठा होकर एक–दूसरे को कथा सुनाती हैं। कथा सुनने के बाद 'पूजन कथा' की प्रसादी वितरित की जाती है। पूजा सम्पन्न होने के बाद महिलाएं गले में डोर धारण करती हैं जो बारह ग्रन्थियों से युक्त होता है। महिलाएं घर के बड़े–बुजुर्गों से आशीर्वाद लेकर व्रत को पूर्ण करती हैं। वट सावित्री व्रत कुमाऊँनी लोक–संगीत से भी जुड़ा हुआ है। इस दिन महिलाएं पारंपरिक लोक गीत जैसे 'सावित्री–मायो,सत्यवानल्यो' जैसे गीत गाकर सावित्री के साहस और पति–भक्ति की प्रशंसा करती हैं। इन गीतों में कुमाऊँ की बोली–बानी और भावनात्मक अभिव्यक्ति का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। इसके अलावा महिलाएं अपनी पारंपरिक पोशाक – घाघरा, चोली और पिछौड़ा पहनकर पूजा में शामिल होती हैं, जो कुमाऊँ की सांस्कृतिक परंपरा का प्रतीक है।

यह व्रत केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि पारिवारिक और सामाजिक संबंधों को मजबूत करने वाला भी है। कुमाऊँ क्षेत्र की महिलाएं इस दिन एक साथ मिलकर पूजा करती हैं, जिससे सामूहिकता और सौहार्द का भाव विकसित

होता है। बुजुर्ग महिलाएं नवविवाहितों को व्रत की महत्ता और इसके विधि–विधान सिखाती हैं। इस प्रकार यह परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती है।

आज के समय में जब पारंपरिक जीवन शैली में परिवर्तन आ रहा है, तब भी कुमाऊँ की महिलाएं इस व्रत को श्रद्धा के साथ निभा रही हैं। नगरों में भी यह परंपरा जीवित है। अब युवा पीढ़ी भी अपने सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ाव बनाए रखने के लिए इस व्रत में भाग ले रही है। वट सावित्री व्रत के माध्यम से स्त्री की शक्ति, सहनशीलता और त्याग की भावना का आदर किया जाता है। यह व्रत केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि कुमाऊँ की स्त्रियों की आंतरिक शक्ति का प्रतीक बन चुका है। कुमाऊँ की सांस्कृतिक पहचान में पर्व–त्योहार, लोककला, भाषा और लोक–विश्वासों का विशेष स्थान है। वट सावित्री व्रत जैसे त्यौहार इस क्षेत्र की महिलाओं की सामाजिक भूमिका, पारिवारिक जीवन और धार्मिक आस्था को दर्शाते हैं। यह व्रत यह भी दर्शाता है कि कुमाऊँ की संस्कृति में स्त्रियाँ न केवल धर्म का पालन करती हैं, बल्कि संस्कृति की वाहक भी हैं।

वट सावित्री व्रत कुमाऊँ की सांस्कृतिक पहचान का एक अभिन्न अंग है। यह व्रत नारी की शक्ति, श्रद्धा और समर्पण का प्रतीक है। इसके माध्यम से न केवल धार्मिक आस्था को अभिव्यक्ति मिलती है, बल्कि सामाजिक संबंधों को भी सुदृढ़ किया जाता है। आधुनिक समय में भी यह परंपरा जीवित है और स्त्रियाँ इसे पूरी श्रद्धा से निभा रही हैं। इस प्रकार वट सावित्री व्रत कुमाऊँ की सांस्कृतिक विरासत को संजोने और अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का माध्यम बनता है। ऐसी लोक परंपराएँ ही किसी क्षेत्र की आत्मा होती हैं और कुमाऊँ की यह आत्मा अत्यंत समृद्ध, जीवंत और गौरवपूर्ण है।

प्रस्तुति
डॉ. नेहा तिवारी पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कर्णप्रयाग, चमोली

देवस्थान

चमोली जनपद का पौराणिक शिव मंदिर : बैरासकुंड

बैरास कुंड शिव मंदिर उत्तराखंड के चमोली जनपद में स्थित एक प्रमुख धार्मिक स्थल है यह स्थान हिंदू पौराणिक कथाओं में वर्णित है जहां रावण ने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए अपने 10 सिरों की आहुति दी थी इस स्थल पर एक प्राचीन शिव मंदिर स्थित है जो दसौली के नाम से भी जाना जाता है यह मंदिर अपनी प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। बैरास कुंड में एक कुंड,यज्ञ स्थल और रावण शिला भी स्थित है जहां रावण की उंगलियों के निशान मौजूद हैं। यह स्थल शिवरात्रि के अवसर पर विशेष रूप से प्रसिद्ध होता है, जब यहां एक बड़ा मेला आयोजित किया जाता है। सावन के मास में यहां पर भक्तों की बहुत भीड़ होती है।

सामान्य दिनों में भी यहां पर दूर–दराज से श्रद्धालु दर्शन करने आते हैं। बैरास कुंड शिव मंदिर कर्णप्रयाग से नंदप्रयाग होते हुए लगभग 45 किलोमीटर दूर है, जबकि जनपद मुख्यालय गोपेश्वर से लगभग 50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। मंदिर स्थल समुद्र तल से लगभग 8000 फीट की ऊंचाई पर स्थित है।

प्रस्तुति–
डॉ. हरीश चंद्र रतूड़ी ,
विभागाध्यक्ष वाणिज्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कर्णप्रयाग,(चमोली)

तकनीक

ग्रीन हाउस/पॉलीहाउस

संरक्षित खेती से वर्षभर हो रहा बेहतर उत्पादन

संरक्षित सब्जी उत्पादन एक ऐसी कृषि प्रणाली है जिसमें विभिन्न तकनीकों का उपयोग करके सब्जियों का उत्पादन किया जाता है ताकि उन्हें मौसम, कीड़ों, बीमारियों और अन्य प्रतिकूल कारकों से बचाया जा सके। यह आमतौर पर ग्रीनहाउस, पॉलीहाउस या अन्य संरक्षित संरचनाओं में किया जाता है अर्थात संरक्षित खेती एक नियंत्रित वातावरण में फसलों को उगाने की प्रथा है जैसे ग्रीनहाउस या सुरंग ताकि उन्हें खराब मौसम, कीटों और बीमारियों से बचाया जा सके। यह विधि तापमान, आर्द्रता, प्रकाश और मिट्टी की स्थितियों को नियंत्रित करने में मदद करती है, जिससे साल भर खेती की जा सकती है और फसल की गुणवत्ता बेहतर होती है।संरक्षित खेती इनपुट–गहन है और नियंत्रित/संरक्षित वातावरण में पूरे साल फसल का उत्पादन प्रदान करती है। खुले खेतों की तुलना में संरक्षित संरचनाओं में फसल के पौधे आम तौर पर शानदार ढंग से बढ़ते हैं और उच्च उपज देते हैं। ऑफ–सीजन के दौरान सब्जी या फूल के उत्पादन के कारण ऐसे उत्पादों का बाजार मूल्य और भी बढ़ जाता है।

संरक्षित सब्जी उत्पादन के लाभः–

बेहतर गुणवत्ताः– संरक्षित वातावरण में पौधों को बेहतर तापमान, नमी, प्रकाश और पोषक तत्वों की आपूर्ति मिलती है, जिससे उच्च गुणवत्ता वाली सब्जियाँ प्राप्त होती हैं।

वर्ष भर उत्पादनः– संरक्षित खेती में, सब्जियाँ पूरे साल उगाई जा सकती हैं,भले ही मौसम अनुकूल न हो।

शीघ्र और अधिक उपजः– संरक्षित खेती में पौधों की वृद्धि तेजी से होती है और वे अधिक उपज देते हैं।

हानि में कमीः– संरक्षित खेती में पौधों को मौसम, कीड़ों और बीमारियों से बचाया जा सकता है जिससे फसल की हानि कम होती है।

कम लागतः– संरक्षित खेती में पानी और खाद की खपत कम होती है, जिससे लागत कम होती है।

बेहतर आर्थिक लाभः– संरक्षित खेती से किसानों को उच्च

गुणवत्ता वाली सब्जियाँ बेचने से अधिक आर्थिक लाभ मिलता है।

संरक्षित सब्जी उत्पादन की तकनीकें

ग्रीनहाउसः– ग्रीनहाउस में, पौधों को ग्लास या प्लास्टिक की दीवारों और छत के साथ एक संरक्षित वातावरण प्रदान किया जाता है।

पॉलीहाउसः– पॉलीहाउस में पौधों को पॉलीथीन की चादर के साथ एक संरक्षित वातावरण प्रदान किया जाता है।

शेड नेटः– शेड नेट का उपयोग करके पौधों को आंशिक रूप से छाया प्रदान की जाती है, जिससे वे सीधे धूप से जलने से बच जाते हैं। संरक्षित सब्जी उत्पादन तकनीक (जैसे कि ग्रीनहाउस या पॉलीहाउस) में कई तरह की सब्जियां उगाई जा सकती हैं। इन सब्जियों में टमाटर, शिमला मिर्च, खीरा, कद्दू, पालक, पत्ता गोभी, गाजर, प्याज और कई अन्य विदेशी सब्जियां शामिल हैं। संरक्षित खेती का उपयोग बेमौसमी सब्जियों को उगाने के लिए भी किया जाता है, जैसे कि खरबूजा, तरबूज, खीरा और कद्दूवर्गीय सब्जियां।

उत्तराखंड में संरक्षित खेती अपनाये जाने की पर्याप्त संभावनाएं हैं और जागरूक किसान इस तकनीक को अपनाने के लिए आगे आ रहे हैं। मुझे इस योजना के तहत वर्ष 2008 में वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली विश्वविद्यालय भरसार में हॉर्टिकल्चर टेक्नोलॉजी मिशन के तहद फेलोशिप प्राप्त हुई,जिससे मैं इस उत्पादन तकनीक को नजदीक से समझ पाया।

प्रस्तुतिः
डॉ. महेंद्र पाल सिंह परमार
विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उत्तरकाशी

प्रकृति और संस्कृति

देवी वाटिका : प्रकृति शिक्षण केंद्र में औषधीय पौधों और देवत्व का अनूठा मिलन

प्रकृति शिक्षण केंद्र, जौलीग्रांट, वास्तव में प्रकृति प्रेमियों और शोधकर्ताओं के लिए एक असाधारण स्थल बन गया है। यह केवल एक केंद्र नहीं, बल्कि ज्ञान, विरासत और आध्यात्मिकता का एक जीवंत संगम है, जहाँ प्रकृति और संस्कृति के गहरे रिश्ते को प्रत्यक्ष रूप से अनुभव किया जा सकता है।यह केवल एक संस्था नहीं, बल्कि एक ऐसा पारिस्थितिक और सांस्कृतिक संवाहक है जो हमें हमारी जड़ों से जोड़ता है और पर्यावरण के प्रति हमारी समझ को गहरा करता है।

इसका 'विरासत पथ' एक अभिनव पहल है,केंद्र का 'विरासत पथ' इसकी सबसे महत्वपूर्ण और अभिनव विशेषताओं में से एक है। यह केवल एक मार्ग नहीं, बल्कि एक अनुभवात्मक यात्रा है, जो हमें न केवल पौधों के पारंपरिक उपयोगों से परिचित कराता है, बल्कि क्षेत्र की समृद्ध ऐतिहासिक और पारिस्थितिक धरोहर का भी दर्शन कराता है। यहाँ के विशेष रूप से तैयार किए गए उद्यान सीखने की प्रक्रिया को बेहद आकर्षक और व्यावहारिक बनाते हैं, जिससे आगंतुक प्रकृति के साथ एक गहरा जुड़ाव महसूस कर पाते हैं। यह केंद्र निस्संदेह, प्रकृति के अनगिनत पाठों तक पहुँचने का एक महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार है। जहाँ हर पत्ती, हर फूल और हर जीव एक कहानी कहता है। पिछले अंक में हमने केंद्र की मनमोहक बटरफ्लाई गैलरी की रंगीन दुनिया का अवलोकन किया था, जो तितलियों की प्रजातियों और उनके जीवन चक्र पर प्रकाश डालती है। इस अंक में, हम केंद्र के 'प्रकृति धरोहर पथ' के एक अत्यंत महत्वपूर्ण और आध्यात्मिक भाग, 'देवी वाटिका' की ओर रुख करते हैं।

नवदुर्गा : प्रकृति में समाहित देवत्व और औषधीय ज्ञान

देवी वाटिका का सबसे अनूठा और प्रभावशाली पहलू यह है कि यह नवदुर्गा के नौ रूपों को औषधियों के रूप में प्रस्तुत करती है। यह भारतीय संस्कृति में प्रकृति और आध्यात्मिकता के अविभाज्य बंधन को और भी मजबूत करती है, जहाँ प्रत्येक देवी एक विशेष औषधीय पौधे से जुड़ी हुई है, जो उसके गुणों और महत्व को दर्शाता है,देवी वाटिका अपनी प्राकृतिक सुंदरता से तो मन मोह लेती है, लेकिन इसकी विशिष्टता इसमें निहित गहन आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व में है। यह वाटिका औषधीय पौधों और हिंदू धर्म की प्रमुख देवियों के बीच के अटूट संबंध को अत्यंत प्रभावी ढंग से दर्शाती है। यहाँ दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती और काली देवियों को समर्पित क्रमशः नीम, केला, आँवला और गुड़हल के वृक्ष लगाए गए हैं, जो इस वाटिका को एक पवित्र और शांत वातावरण प्रदान करते हैं। यह अवधारणा भारतीय संस्कृति की उस गहरी समझ को दर्शाती है, जहाँ प्रकृति को देवी

स्वरूप माना गया है और पेड़–पौधों को देवत्व का प्रतीक।

देवी वाटिका का सबसे अनूठा पहलू यह है कि यह नवदुर्गा के नौ रूपों को औषधियों के रूप में प्रस्तुत करती है, जो भारतीय संस्कृति में प्रकृति और आध्यात्मिकता के अविभाज्य बंधन को और भी मजबूत करती है।

प्रथम शैलपुत्री : हरड़ :– आयुर्वेद की एक महत्वपूर्ण औषधि, हरड़, जिसे हिमावती भी कहा जाता है, को देवी शैलपुत्री का स्वरूप माना गया है। यह अपने असंख्य औषधीय गुणों के लिए जानी जाती है और पाचन से लेकर विभिन्न रोगों के उपचार में इसका उपयोग होता है।

द्वितीय ब्रह्मचारिणी : ब्राह्मी :– स्मरण शक्ति बढ़ाने, रक्त विकारों को दूर करने, त्वचा को स्वस्थ रखने और वाणी को मधुर बनाने वाली ब्राह्मी को, जिसे अक्सर 'सरस्वती' के नाम से भी जाना जाता है, देवी ब्रह्मचारिणी का प्रतीक माना गया है। यह एकाग्रता और ज्ञान का प्रतीक है।

तृतीय चंद्रघंटा : चन्दुसूर :– धनिये के समान दिखने वाला यह पौधा मोटापा कम करने में लाभकारी है और इसे चर्महंती भी कहते हैं, यह देवी चंद्रघंटा का स्वरूप है।

चतुर्थ कुष्माण्डा : पेठा :– स्वादिष्ट पेठा मिठाई बनाने में प्रयुक्त, यह औषधि रक्त विकारों को दूर करने और पेट साफ करने में सहायक है। कुम्हड़ा भी इसी का एक रूप है और इसे देवी कुष्माण्डा का प्रतीक माना गया है। जो सृष्टि की रचना करने वाली देवी हैं।

पंचम स्कंदमाता : अलसी :– देवी स्कंदमाता औषधि के रूप में अलसी में विद्यमान मानी जाती हैं, जो वात, पित्त और कफ जैसे त्रिदोषों को नष्ट करने वाली मानी जाती है। अलसी अपने ओमेगा–3 फैटी एसिड और फाइबर गुणों के लिए आधुनिक विज्ञान में भी प्रशंसित है।

षष्ठम कात्यायनी : मोइया :– आयुर्वेद में अम्बा, अम्बालिका और अम्बिका जैसे कई नामों से जानी जाने वाली मोइया, जिसे स्थानीय रूप से मोइया भी कहते हैं, कफ, पित्त और गले के रोगों का नाश करती है। यह देवी कात्यायनी का स्वरूप है।

सप्तम कालरात्रि : नागदौन :– देवी कालरात्रि को नागदौन औषधि के रूप में जाना जाता है। यह सभी प्रकार के रोगों में लाभकारी मानी जाती है और विशेष रूप से मन एवं मस्तिष्क के विकारों को दूर करने में सहायक है, जो अंधकार और नकारात्मकता को दूर करने की देवी कालरात्रि की शक्ति को दर्शाता है।

अष्टम महागौरी : तुलसी :– आयुर्वेद की सबसे प्रमुख और पवित्र औषधियों में से एक, तुलसी, जो रक्त को शुद्ध करती है, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है और हृदय रोगों को दूर करने में मदद करती है, देवी महागौरी का प्रतीक है। यह अपनी सादगी और शुद्धता के लिए जानी जाती है।

नवम सिद्धिदात्री : शतावरी :– दुर्गा का नौवां और अंतिम रूप सिद्धिदात्री है, जिसे नारायणी शतावरी भी कहते हैं। यह बल, बुद्धि और विवेक के लिए उपयोगी मानी जाती है, और विशेष रूप से महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है, सभी सिद्धियों को प्रदान करने वाली देवी की शक्ति को दर्शाती है।

देवी वाटिका एक उत्कृष्ट उदाहरण है कि कैसे हमारे पूर्वजों ने प्रकृति के औषधीय गुणों को आध्यात्मिकता और धर्म से जोड़ा। यह केवल अंधविश्वास नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ गहराई से जुड़े रहने और उसके रहस्यों को समझने का एक तरीका था। यह हमें सिखाता है कि प्रकृति केवल संसाधनों का स्रोत नहीं, बल्कि एक पवित्र जीवनदायिनी सत्ता है जिसका हमें सम्मान, संरक्षण और पूजा करनी चाहिए। प्रकृति शिक्षण केंद्र, अपने विविध और बहुआयामी प्रयासों से, हमें न केवल पर्यावरण के प्रति जागरूक कर रहा है, बल्कि हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और उसके साथ प्रकृति के अटूट संबंधों को भी उजागर कर रहा है। यह वास्तव में एक ऐसा अद्वितीय स्थान है जहाँ ज्ञान, विरासत और आध्यात्मिकता एक साथ आकर हमारे जीवन को समृद्ध बनाते हैं और हमें प्रकृति के साथ एक अधिक सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं।

प्रस्तुति–अंकित तिवारी,
उप सम्पादक

फिल्म समीक्षा

उत्तराखंड सिनेमा की उत्कृष्ट कृति : 'मिशन देवभूमि'

किसी भी फिल्म का निर्माण, चाहे वह किसी भी भाषा की हो, उसकी संस्कृति का प्रत्यक्ष प्रतिबिंब होता है और अक्सर ज्वलंत सामाजिक समस्याओं से संबंधित मुद्दों के पुनरुत्थान और सुधार के लिए एक माध्यम के रूप में कार्य करता है। वर्तमान परिदृश्य में, ऐसे ही लक्ष्य की प्राप्ति हेतु फिल्म निर्माता रवि ममगाईं द्वारा 'मिशन देवभूमि' एक साहसिक, विचारोत्तेजक और समयबद्ध प्रयास है। इस फिल्म का मुख्य विषय लड़कियों की तस्करी और भूमि कानून शोषण जैसे गंभीर मुद्दों का सामना करने वाले आंदोलन के इर्द–गिर्द घूमता है। फिल्म का उद्देश्य, अपनी कहानी के माध्यम से, समाज में इन जटिल और संवेदनशील मामलों के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देना और एक सही विचारधारा और सोच को प्रज्ज्वलित करना है।

'मिशन देवभूमि' पहाड़ों के एक ऐसे व्यक्ति महावीर की कहानी है जो अपनी प्यारी बहन अंजलि को बचाने के लिए लड़कियों की तस्करी करने वाले समूह के खिलाफ बहादुरी से खड़ा होता है और वीरतापूर्ण रुख अपनाता है। वर्तमान में, फिल्म के रूप में यह कृति, न केवल मनोरंजन के रूप में, बल्कि एक उद्देश्य (मिशन) के रूप में, किसी भी पिछली या वर्तमान की आने वाली फिल्मों से अलग है। यह उत्तराखंड के लोगों के लिए अपनी मातृभूमि की रक्षा हेतु उठ खड़े होने के लिए एक जागृति का आह्वान है।

फिल्म 'मिशन देवभूमि' में एक संपूर्ण सिनेमा के गुण समाहित हैं– रोमांच, एक्शन, ड्रामा, त्रासदी, मधुरता, कॉमेडी और दिल को छू लेने वाली एक प्रेम कहानी और इन सभी को एक साथ मिलाकर उत्तराखंडी सिनेमा के इतिहास में महत्वपूर्ण क्षण बुने गए हैं। यह फिल्म अपनी सम्मोहक पटकथा, प्रभावशाली संवाद, शानदार रंग ग्रेडिंग , मंत्रमुग्ध कर देने वाली सिनेमैटोग्राफी, मनमोहक संगीत और बहुत कुछ के साथ एक प्रभावपूर्ण सिनेमा का अनुभव कराती है। निश्चित ही दर्शकों को एक अभूतपूर्व दृश्य और भावनात्मक सफर का अनुभव होगा। बृजमोहन वेदवाल, आयुषी जुयाल, रवि ममगाईं, शिवांशा चंद, नेहा मेहरोत्रा, सावन गैरोला, सते पटवाल, अनूप वी. कठैत, जस्सी पंवार, संदीप छिलबिट, साहिल, प्रवेंद्र रावत, सूरत रौतेला, उषा रौतेला, त्रिभुवन चौहान, बृजेश भट्ट, पदम गुसाईं, योगेश सकलानी, अंबरीश सिंह, राम रवि, अजय देव, दीपक सागर, रवि नेगी, ईशा जखमोला, रचना पंत, सोनम बालूनी और तनिष्का ममगाईं द्वारा किया गया सुंदर अभिनय 'मिशन देवभूमि' का एक शानदार प्रतिबिंब है।

'मिशन देवभूमि' हमारे शांतिपूर्ण राज्य में उभर रहे एक ज्वलंत मुद्दे को संबोधित करती है। इस फिल्म की आकर्षक और मनमोहक सिनेमैटोग्राफी, जिसे प्रसिद्ध युवि नेगी ने तैयार किया है, फिल्म निर्माण में उनकी उल्लेखनीय यात्रा की गहराई और विशेषज्ञता को दर्शाती है। इस फिल्म में ऐसे मनोरंजक दृश्यों का समावेश है जिनमे दर्शक पूरी तरह से डूब जाएंगे और कुछ दृश्य दर्शकों को पूरी तरह झकझोर कर रख देंगे। अपने कार्य में महारथ संपादक भागीरथ शर्मा ने फिल्म के हर पहलू को अपना अंतिम और दोषरहित स्पर्श देते हुए एक चमत्कारिक और प्रभावपूर्ण स्वरूप में बदल दिया है । इस फिल्म की तकनीकी उत्कृष्टता और मुख्यधारा, बॉलीवुड के समान रखने का प्रयास किया गया है , लेकिन इसकी आत्मा में उत्तराखंड की भूमि गहराई से निहित है। फिल्म की भावनात्मक तीव्रता न केवल दर्शकों के दिमाग में, बल्कि उनके दिलों

और आत्माओं में भी गूंज रही है। फिल्म की खूबसूरती को और बढ़ाते हुए इसमें चार मधुर गीत हैं– जिन्हें जीतेंद्र पंवार, अमित खरे, सौरभ मैथानी और प्रतीक्षा बमराרा ने पहाड़ियों की प्रतिध्वनि और गूंज के बीच बहुत मधुरता और भावपूर्ण ढंग से गाया है। अमित वी. कपूर द्वारा रचित संगीत, उनकी विशिष्ट प्रतिभा का एक और प्रमाण है, जो फिल्म के भावनात्मक प्रभाव को बढ़ाता है।

'मिशन देवभूमि' के पीछे की पूरी टीम अपनी अटूट लगन और पूर्ण समर्पण के लिए प्रशंसा की पात्र है। यह फिल्म पूर्व में लिखित, ब्लॉकबस्टर "पोथली" की लेखिका रुचि ममगाईं की रचनात्मक शक्ति हैं, जो क्रूर वास्तविकताओं में निहित एक मार्मिक कहानी प्रस्तुत करती है। यह फिल्म उन भूमिगत और विनाशकारी आंदोलन की कहानी को बताती है जो देवभूमि की पवित्रता को खतरे में डाल रहे हैं । यह फिल्म इन खतरों का सामना करने के उद्देश्य को लेकर एकता, शक्ति और अटूट दृढ़ संकल्प के लिए बनायी गई है। यह एक कहानी से बढ़कर, एक कार्यवाही का आह्वान है, सिनेमा के माध्यम से एक अपील है जो लोगों को अपनी बेटियों, बहनों और अपनी भूमि की रक्षा के लिए उठ खड़े होने का आग्रह करती है। अपनी विशिष्ट शैली में, एक बार फिर, निर्देशक रवि ममगाईं द्वारा उनकी अब तक की सबसे प्रभावशाली कृति के रूप में, सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण और राष्ट्रीय रूप से प्रासंगिक मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करने का प्रयास किया गया है। सुमाड़ी, श्रीनगर, ऋषिकेश, टिहरी, चकराता और देहरादून सहित कई लुभावने स्थानों पर दर्शायी गई 'मिशन देवभूमि' सिर्फ एक फिल्म नहीं है – यह एक गतिमान क्रांति है। यह फिल्म 30 मई से ही दर्शकों का मनोरंजन कर रही है और अब 'मिशन देवभूमि' की टीम की सफल दौड़ के साथ नित नये रिकॉर्ड बना रही है।

रवि ममगाईं ने उत्तराखंड फिल्म उद्योग में एक उत्कृष्ट निर्देशक के रूप में एक बेहतरीन फिल्म निर्देशन का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुति : डॉ. अनामिका शर्मा, प्राचार्या, द्रोणाज कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्निकल एजुकेशन, देहरादून

प्रो.तलवाड़ ने विद्यार्थियों को बताया समय प्रबंधन का महत्व

साईं सृजन पटल के संयोजक सेवानिवृत्त प्राचार्य प्रो.के. एल.तलवाड़ ने उत्तरकाशी स्थित अमन भैया की क्लास (एबीसी) के विद्यार्थियों को 'समय प्रबंधन' पर ऑनलाइन व्याख्यान दिया। एबीसी के उद्‌घाटन सत्र 'राह' पर बोलते हुए कहा कि 'जहां चाह है,वहां राह है।' यह एक व्यक्ति के दृढ़संकल्प और लगन को दर्शाता है, जो उसे किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति में मदद करता है, भले ही राह में कितनी भी कठिनाईयां क्यों न हों। विद्यार्थियों के जीवन में 'समय प्रबंधन' का अत्यधिक महत्व है। विद्यार्थियों को यह समझना होगा कि समय जीवन का सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है और इसका सही उपयोग करना ही सफलता की कुंजी है। विद्यार्थी अपने करिअर को स्पष्ट निर्धारित करके,महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता देकर, शेड्यूल बनाकर,टाल–मटोल से बचकर,ध्यान भटकाने वाली चीजों से दूर रहकर, प्रभावी नोट लेने का अभ्यास करके और स्वस्थ जीवन शैली अपनाकर समय प्रबंधन की कला में निपुण हो सकते हैं। उल्लेखनीय है कि उत्तरकाशी नगर में अमन तलवाड़ समय–समय पर अपनी मोटिवेशनल क्लासेज के माध्यम से विगत पांच वर्षों से विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते आ रहे हैं। कोरोनाकाल में भी उन्होंने तीन महीने तक 40 विद्यार्थियों को भौतिकी,रसायन विज्ञान और गणित की फ्री कोचिंग दी थी।

प्रस्तुति: श्रीमती नीलम तलवाड़

उत्तराखंड की पारिस्थितिक, सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर- बुग्याल

बुग्याल का अर्थ है–बुग्गीदार घास के मैदान। इन्हें विभिन्न राज्यों में अलग–अलग नामों से पुकारा जाता है। भारत में तीन प्रकार के घास के मैदान पाए जाते हैं जिसमें बुग्याल महत्वपूर्ण है जो सामान्यतः समुद्र–तल से 3300 मीटर की उंचाई, जहाँ वृक्ष रेखा (Tree line) समाप्त हो जाती है, से लगभग 4500 मीटर की ऊँचाई तक पाए जाते हैं। वृक्ष रेखा सामान्यत 3300 मीटर से 4000 मीटर ऊपर तक होती है जो विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है और इस उच्चतम उंचाई तक ही वृक्ष वृद्धि संभव है। बुग्याल एक जलवायु चरमोत्कर्ष समुदाय है। 4500 मीटर की ऊँचाई पर बर्फ रेखा (Snow line) प्रारंभ हो जाती है और इस ऊँचाई से ऊपर वनस्पतियां बहुत कम पाई जाती है। इस प्रकार से बुग्यालों को हम वृक्ष रेखा और बर्फ रेखा के बीच पाए जाने वाले घास के मैदान कह सकते हैं।

बुग्याल हिमालयी नदियों के ऊपरी जल ग्रहण क्षेत्र का भी निर्माण करते हैं और इन घास के मैदानों में अनेक महत्वपूर्ण औषधीय जड़ी–बूटियां भी उगती है। बुग्याल जैव–विविधता के केंद्र माने जाते हैं जहाँ जानवरों और पौधों की अनेक स्थानीय प्रजातियां पाई जाती हैं। मानवजनित दबाव और जलवायु परिवर्तन सहित अनेक कारकों से बुग्यालों का अस्तित्व खतरे में है। बुग्यालों को प्रभावित करने वाले अनेक कारक है। कम समय के अंतराल पर असामान्य और अत्यधिक वर्षा एवं बादल फटने की घटनाओं से बुग्यालों में मिट्टी का कटाव होता है। जलवायु परिवर्तन और वैश्विक तापवृद्धि के कारण वृक्ष रेखा अधिक ऊँचाई की ओर बढ़ रही है और इसके कारण बुग्यालों का क्षेत्र धीरे–धीरे सिकुड़ सकता है। बुग्यालों का पहाड़ों में होने वाले विभिन्न सांस्कृतिक क्रिया–कलाप और उस क्षेत्र में प्रवास कर रही आबादी के साथ अन्योन्याश्रित संबंध है। बुग्यालों के महत्त्व को समझते हुए ही उनमें खाली पैर जाने की प्रथा रही है। खाली पैर जाने से बुग्यालों के विभिन्न औषधीय एवं संकटापन्न पादपों को कोई नुकसान नहीं होता और साथ ही त्वचा के सीधे संपर्क में आने के कारण संभवतः उन पादपों के औषधीय गुणों के कारण मानव शरीर के लिए यह अवश्य ही लाभप्रद होगा। बुग्यालों में शोर करना भी मना है। इस प्रकार की सामाजिक धारणा संभवतः इसलिए थे ताकि वहाँ के जीव–जंतु दूसरे क्षेत्रों में भाग न जाए जो वहाँ के पारिस्थितिक–तंत्र में संतुलन बनाए रखने के लिए आवश्यक है। पर्वतीय महाकुंभ नंदा राजजात यात्रा का भी एक महत्वपूर्ण पड़ाव देवाल क्षेत्र के बुग्याल है। उत्तराखंड में लगभग 200 से ज़्यादा बुग्याल है जिनमे सर्वाधिक चमोली जनपद में अवस्थित है। बुग्याल उत्तराखंड की संस्कृति से भी जुड़ा हुआ है।यहाँ के विभिन्न लोक–कथाओं, लोक–गीतों, सांस्कृतिक गतिविधियों, धार्मिक मान्यताओं में बुग्यालों का महत्वपूर्ण स्थान है।चमोली का नन्दा राजजात यात्रा हो या उत्तरकाशी का बटर फेस्टिवल ये अनेक वर्षों से बुग्यालों से जुड़े रहे हैं। बुग्याल स्थानीय चरवाहों को आजीविका रखने में भी बहुत मदद करते हैं। उत्तराखंड के बुग्यालों में पिछले कुछ वर्षों में 2.5 किलोमीटर तक का कटाव देखा गया है। वर्ष 2019 में राज्य सरकार द्वारा बुग्याल संरक्षण संबंधी परियोजनाओं की देखरेख और क्रियान्वयन के लिए दयारा बुग्याल संरक्षण समिति का गठन किया गया था। इस समिति ने उत्तरकाशी जिले में बुग्यालों की सुरक्षा में सकारात्मक परिणाम लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और यह कदम बुग्याल संरक्षण में महत्वपूर्ण पहल था। 11,000 फीट की ऊँचाई पर उत्तरकाशी जिले में अवस्थित दयारा बुग्याल के संरक्षण के लिए सफल नूतन प्रयोग किए गए। पर्यटकों के दबाव, मवेशियों द्वारा अत्यधिक चराई एवं दो जलधाराओं द्वारा मिट्टी के कटान से बुग्याल में

दरारें पड़ गई थी। इस समस्या के समाधान के लिए चरवाहे समुदाय को मवेशियों के चरने के लिए वैकल्पिक स्थान उपलब्ध कराया गया और बुग्याल क्षेत्र में पर्यटन को भी नियंत्रित किया गया। साथ ही सरकार द्वारा मिट्टी के कटाव को ठीक करने के लिए पर्यावरण के अनुकूल तकनीकों का प्रयोग किया गया। इसके अंतर्गत स्थानीय वनस्पति के पुनर्जनन के लिये नारियल की भूंसी से बनी बड़ी–बड़ी चटाइयाँ बिछाई गई। साथ ही पानी के संचारक प्रभाव को कम करने और मिट्टी के कटाव को रोकने के लिए जलधाराओं को पिरुल और बांस की छड़ियों से भारी बोरियो की मदद से नियंत्रित किया गया। बुग्याल का पारिस्थितिक तंत्र बेहद नाजुक होता है और उसके संरक्षण में स्थानीय समुदाय की प्रमुख भूमिका है। बुग्याल आदिकाल से ग्रीष्म ऋतु में खानाबदोश समुदायों के मवेशियों द्वारा चरने के लिए खुले रहे हैं जो बर्फबारी प्रारंभ होने पर घाटियों में पलायन करते हैं। ग्रीष्मकाल में बुग्यालों की हरी भरी घास और पाए जाने वाले जीवंत जंगली फूल पर्यटकों और प्रकृति प्रेमियों को खूब आकर्षित करते हैं। बुग्याल पशुओं के लिए चारे के साथ–साथ जड़ी–बूटी, फल, कीटों के लिए पराग रस, कीड़े–मकोड़े सहित जैव–विविधता के रूप में पौष्टिक भोजन का एक प्रमुख स्रोत हैं। बद्री गाय के दूध का पौष्टिक होना और पोषण से भरपूर होने का प्रमुख कारण उनका बुग्याल की वनस्पतियों पर भोजन के लिए निर्भर होना है। इन वनस्पतियों की पौष्टिकता और पर्याप्त पोषक तत्व इन पर निर्भर मवेशियों के दूध में परिलक्षित होते हैं। बुग्याल में पाए जाने वाले पादप मिट्टी की सतह को बेहतर बनाने,भूस्खलन क्षेत्रों में मिट्टी बांधने में सहायता सहित मृदा की नमी संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन बुग्यालों में विभिन्न दुर्लभ जड़ी–बूटियाँ और जानवर पाए जाते हैं। चूँकि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में उनकी कीमत काफी ज्यादा है इसलिए इनकी तस्करी भी होती है। साथ ही बुग्यालों में अनेक सजावटी पादप भी पाए जाते हैं।कीड़ा–जड़ी एक महत्वपूर्ण औषधि है जो इन बुग्यालों से प्राप्त होती है और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अत्यधिक मांग होने के कारण इसकी कीमत बहुत ज्यादा है और आर्थिक लाभ के उद्देश्य से कीड़ा–जड़ी को प्राप्त करने के लिए बुग्यालों का खूब दोहन हो रहा है।

बुग्याल संरक्षण के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाना अत्यंत आवश्यक है जिसमें अनुकूल पर्यावरण को अनुरक्षण करने के साथ–साथ नियंत्रित पर्यटन, संसाधनों के दोहन को

रोकना एवं सक्रिय सामुदायिक भागीदारी महत्वपूर्ण है। राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2025 से 2 सितंबर को बुग्याल संरक्षण दिवस मनाने की घोषणा इसके संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। बुग्याल उत्तराखंड की सांस्कृतिक धरोहर है और इनकी अमूल्य जैव–विविधता एवं पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखना इनके संरक्षण के लिए नितांत आवश्यक है।

प्रस्तुति : डॉ. इंद्रेश कुमार पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर (वनस्पति विज्ञान),
डॉ. शिवानंद नौटियाल राजकीय स्नातकोतर
महाविद्यालय, कर्णप्रयाग (चमोली)

हिन्दू स्टडीज

दून विश्वविद्यालय में शुरू होगा

हिन्दू अध्ययन में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

दून विश्वविद्यालय के हिन्दू अध्ययन केंद्र में एमए हिन्दू स्टडीज के लिए कुलपति प्रो.सुरेखा डंगवाल की अध्यक्षता में अकादमिक सलाहकार समिति की बैठक 3 जून को संपन्न हुई। बैठक में दो वर्षीय कोर्स के चार सेमेस्टर के पाठ्यक्रम का फ्रेम वर्क तैयार किया गया। कुलपति ने कहा कि राज्य सरकार हिन्दू अध्ययन केंद्र के गठन एवं भारतीय संस्कृति,दर्शन तथा लोक कला के क्षेत्र में शिक्षण एवं शोध के लिए प्रतिबद्ध है। यह पाठ्यक्रम वर्तमान सत्र से प्रारंभ होगा। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दू विश्वविद्यालय वर्धा के पूर्व कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र के कहा कि हमें दो वर्षीय स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के साथ–साथ चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम भी तैयार करना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों के अनुरूप यह शिक्षण कार्य संपादित करने में सहूलियत देगा।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दू अध्ययन केंद्र के समन्वयक एवं संस्कृत विभाग के आचार्य प्रो.सदाशिव कुमार द्विवेदी ने पाठ्यक्रम में लोककला,लोकभाषा,खानपान, रीति–रिवाज, व्रत त्योहार आदि जोड़ने के साथ–साथ संवाद विज्ञान, तार्किक संवाद शैली को भी सम्मिलित करने पर जोर दिया। दिल्ली विश्वविद्यालय हिन्दू अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो.ओमनाथ बिमाली ने कहा कि हमें योग, उपनिषद,वेद जैसे ग्रन्थों पर छोटे–छोटे ज्ञानवर्धक और रोजगारपरक विषयों को भी पाठ्यक्रम में जोड़ना होगा। दिल्ली विश्वविद्यालय हिन्दू अध्ययन केंद्र की संयुक्त निदेशक प्रो. प्रेरणा मल्होत्रा ने कहा कि यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर केंद्रित होगा।

उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति प्रो. सुधा रानी पांडेय ने कहा कि यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की तार्किक सोच एवं विमर्श के दायरे को बढ़ाने में सहायक होगा। दून विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर हिन्दू स्टडीज के समन्वयक प्रो.एच.सी.पुरोहित ने बताया कि दून विश्वविद्यालय में वर्तमान सत्र 2025–26 से दो वर्षीय (चार सेमेस्टर) 'हिन्दू अध्ययन में एम.ए.' पाठ्यक्रम प्रारंभ हो रहा है। प्रवेश हेतु किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से किसी भी विषय में पचास प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक डिग्री होनी चाहिए। अनुसूचित जाति और जनजाति के लिए न्यूनतम 45 प्रतिशत अंक होने चाहिए। ऑनलाइन प्रवेश आवेदन की तिथि 9 जुलाई 2025 रखी गई है।

प्रस्तुति-प्रो.एच.सी. पुरोहित
समन्वयक, सेंटर फॉर हिन्दू स्टडीज
दून विश्व विद्यालय, देहरादून
(उत्तराखण्ड)

महिला सशक्तिकरण

पूनम राणा : अडिगसंकल्पों की मिसाल

जब इरादे बुलंद हों तो रास्ते अपने आप बनते जाते हैं। यह पंक्ति कर्णप्रयाग निवासी श्रीमती पूनम राणा के जीवन पर खरी उतरती है। अपने सादगी भरे जीवन और अडिग संकल्पों से वह आज पहाड़ की महिलाओं के लिए महिला सशक्तिकरण की एक मिसाल हैं। पूनम राणा का जन्म 5 फरवरी 1972 को चमोली जिले के माणा गाँव के स्व. श्रीमती जौंवती देवी व स्व.श्री सोबन सिंह परमार के घर में हुआ, जो कि एक मध्यमवर्गीय परिवार था। भोटिया जनजाति से संबंध रखने वाली पूनम राणा ने अपना बचपन माणा की दुर्गम व कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में बिताया। बचपन से ही उन्होंने अपनी माँ, ताई, चाची व अन्य ग्रामीण महिलाओं को संघर्ष करते हुए देखा, परन्तु यह संघर्ष अकेले का नहीं था, बल्कि आपसी सहयोग व सामूहिक जीवटता का उदाहरण भी था। यहीं से उनके मन में यह भावना जन्मी कि वे भविष्य में किसी न किसी रूप में महिलाओं के लिए काम करेंगी। भोटिया जनजाति की पारंपरिक जीवनशैली में वर्ष के छह–छह महीने अलग–अलग स्थानों पर निवास करने के कारण पुराने समय में लड़कियों को ज्यादा नहीं पढ़ाया जाता था, परन्तु उन्हें परंपरागत हस्तशिल्प दन, कालीन व ऊनी वस्त्र बुनना आदि में पारंगत किया जाता था। पूनम राणा ने भी बचपन में ही यह कौशल अपनी माँ व ताई से सीख लिए थे । हाईस्कूल की शिक्षा माणा घिघराण इंटर कॉलेज से प्राप्त करने के पश्चात् उनका विवाह श्री इन्दर सिंह राणा से हो गया। इसके बाद वे अपने दो पुत्रों की परवरिश व पारिवारिक दायित्वों में व्यस्त हो गईं। लेकिन लड़कियों व महिलाओं के प्रति उनके लगाव और सेवा भावना ने उन्हें कभी थमने नहीं दिया। इसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने एक बालिका को गोद लेकर उसकी शिक्षा से लेकर विवाह तक की जिम्मेदारी उठाई।जब पारिवारिक जिम्मेदारी थोड़ी कम हुईं, तब वर्षों से उनके भीतर पल रहा सपना एक बार फिर पंख फैलाने लगा। इसी दौरान उन्हें जन शिक्षण संस्थान के बारे में जानकारी मिली, जिसका उद्देश्य महिलाओं को प्रशिक्षण देकर उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना है। पूनम राणा ने इसमें प्रशिक्षक के रूप में लगभग पाँच से छह वर्षों तक कार्य किया। उन्होंने गांव–गांव जाकर महिलाओं को दन, कालीन, स्वेटर आदि बनाना सिखाया। यहाँ तक कि जब कभी महिलाओं को सिखाने के लिए उचित स्थान नहीं मिला तो उन्होंने अपने घर पर भी प्रशिक्षण देकर महिलाओं को हुनरमंद बनाया। वर्ष 2020 पूनम राणा के जीवन का सबसे कठिन मोड़ बनकर आया। जब वह किसी दूरस्थ गाँव में प्रशिक्षण दे रही थी अचानक से गंभीर रूप से बीमार हो गई, बड़े–बड़े अस्पताल के डॉक्टर उनकी बीमारी को नहीं समझ पा रहे थे, डॉक्टर को उनके स्वस्थ होने की बहुत कम उम्मीद थी । लेकिन लम्बे समय के पश्चात् वे स्वस्थ हुई और इसे वह नया जीवन मानती हैं. इस नए जीवन को उन्होंने पूरी तरह महिलाओं की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। वे कहती हैं, "ईश्वर ने मुझे नया जीवन इसी उद्देश्य के लिए दिया है ताकि मैं महिलाओं के लिए और कार्य कर सकूं।" स्वस्थ होने के कुछ समय पश्चात पूनम राणा अपनी परिचित श्रीमती चंद्रकला नौटियाल द्वारा प्रेरित करने पर फीलगुड फाउंडेशन से जुड़ीं। इस संस्था की स्थापना श्रीमती पूनम शर्मा और श्री आशीष शर्मा द्वारा की गई । यह संस्था प्लास्टिक मुक्त सैनिटरी पैड का उत्पादन कर उत्तराखंड की बालिकाओं और महिलाओं को प्लास्टिक मुक्त सैनिटरी पैड के उपयोग हेतु प्रेरित करती है और मासिक धर्म सुरक्षा पर समाज में व्याप्त भ्रांतियों को तोड़ने का कार्य करती है। पूनम राणा ने इस मिशन को चमोली जिले में एक आंदोलन का रूप दे दिया। आज वे फीलगुड फाउंडेशन की चमोली जिले की जिला संयोजिका हैं और चमोली के दूरस्थ गाँवों, स्कूलों व कॉलेजों में मासिक धर्म सुरक्षा पर व्याख्यान देती हैं। साथ ही वे प्लास्टिक मुक्त सैनिटरी पैड के प्रयोग से महिलाओं को न केवल स्वस्थ जीवन जीने की दिशा में प्रोत्साहित करती हैं, बल्कि उन्हें इसके उत्पादन व बिक्री से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर भी बना रही हैं।आज 1100 से अधिक महिलाएँ व किशोरियाँ उनसे जुड़ी हैं। फीलगुड फाउंडेशन स्कूलों और कॉलेजों में सेनेटरी पैड मशीन व पैड यूनिट स्थापित कर रही है।

शुरुआत में उन्हें इस कार्य के लिए समाज के रूढ़िवादी लोगों से विरोध का सामना करना पड़ा क्योंकि आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में मासिक धर्म जैसे मुद्दों पर खुलकर बात करना एक सामाजिक वर्जना मानी जाती है। लेकिन पूनम राणा ने हार नहीं मानी। अपने साथियों के साथ वे लगातार महिला स्वास्थ्य, स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण के इस अभियान को आगे बढ़ा रही हैं। उनके समर्पण और सेवा भाव को देखते हुए उन्हें "नारी शक्ति सम्मान 2024" से सम्मानित किया गया, साथ ही उन्हें विभिन्न मंचों व सम्मेलनों में सम्मानित किया गया पूनम राणा मानती हैं कि जीवन में नकारात्मकता को त्यागकर, दूसरों के लिए करुणा और सकारात्मक सोच ही सच्चा मार्ग है। वे अपनी सफलता का श्रेय चंद्रकला नौटियाल, पूनम शर्मा, आशीष शर्मा और अपने परिवार को देती हैं, जिनके अविरल सहयोग के बिना यह कार्य इतना व्यापक रूप नहीं ले पाता।

पूनम जैसी महिलाएँ हमें यह सिखाती हैं कि जीवन में चाहे कितनी भी कठिनाई हो, यदि दृढ़ इच्छाशक्ति हो तो एक सामान्य गृहणी भी समाज की दिशा बदल सकती है। उनका जीवन प्रत्येक उस महिला के लिए प्रेरणा है, जो अपने भीतर कुछ करने का सपना संजोए बैठी है। बस एक कदम बढ़ाने की देर है।

प्रस्तुति – हिना नौटियाल,
असिस्टेंट प्रोफेसर वाणिज्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कर्णप्रयाग।

उपलब्धि डॉ.विजय कांत पुरोहित को मिला गौरा देवी पर्यावरण सम्मान

विगत 18 सालों से पर्यावरण एवं जड़ी–बूटी संरक्षण के क्षेत्र में कार्य कर रहे हे.न.ब. गढ़वाल केंद्रीय विश्वविद्यालय में कार्यरत डॉ. विजय कान्त पुरोहित को 28 वां गौरा देवी पर्यावरण पुरस्कार 2025 से सम्मानित किया गया। डॉ. पुरोहित को यह सम्मान ज्योर्तिमठ चमोली के उर्गम घाटी में प्रतिवर्ष 5–6 जून को विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित होने वाले दो दिवसीय गौरा देवी पर्यावरण एवं प्रकृति पर्यटन विकास मेले के अवसर पर उत्तराखंड सरकार की विधानसभा अध्यक्षा श्रीमती ऋतु भूषण खंडूरी द्वारा प्रदान किया गया है। डॉ. विजय कान्त पुरोहित पुत्र स्वर्गीय श्री अनुसूया प्रसाद पुरोहित एवं स्वर्गीय श्रीमती दिगम्बरी देवी पुरोहित का जन्म 1974 में ग्राम किमनी, थराली, जिला चमोली गढ़वाल, उत्तराखंड में हुआ। अपनी प्राथमिक शिक्षा प्राथमिक विद्यालय,सरकारी स्कूल काखड़ा तथा इंटरमीडिएट कॉलेज थराली से लेने के बाद डॉ. पुरोहित ने वानिकी में विशेषज्ञता के साथ वनस्पति विज्ञान और जंतु विज्ञान (प्राणीशास्त्र) में स्नातक की डिग्री और वनस्पति विज्ञान में स्नातकोत्तर डिग्री के साथ ही एचएनबी गढ़वाल विश्वविद्यालय से प्लांट फिजियोलॉजी में डॉक्टरेट की उपाधि क्रमशः 1994, 1996 और 2003 में उत्तीर्ण की। पादप ऊतक संवर्धन और पारंपरिक तरीकों के माध्यम से हिमालयन ओक्स (बांज) की चयनित प्रजातियों के प्रसार पर केंद्रित उनका डॉक्टरेट अनुसंधान कार्य 1997–2002 तक प्रोफेसर एलएमएस पालनी तथा डा.एस.के. नंदी की देखरेख में प्रख्यात जी.बी. पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान, कोसी–कटारमल, अल्मोड़ा में पूरा हुआ। इस शैक्षिक पृष्ठभूमि ने उन्हें पादप जीव विज्ञान और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में एक मजबूत आधार प्रदान किया है। वर्तमान में डॉ. विजय कांत पुरोहित प्लांट फिजियोलॉजी और प्लांट प्रसार पर ध्यान केंद्रित करने के साथ संरक्षण जीव विज्ञान में विशेषज्ञता वाले एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं और साथ ही उच्च शिखरीय पादप कार्यिकी शोध केन्द्र (एचएपीपीआरसी), स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर एंड एलाइड साइंस, एचएनबी गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर (गढ़वाल) उत्तराखंड के निदेशक पद का अतिरिक्त कार्यभार भी संभाल रहे हैं। डॉ. पुरोहित ने इस सम्मान के लिए लक्ष्मण सिंह नेगी सचिव जनदेश कल्प क्षेत्र भरकी एवं प्रो. आर.के. मैखुरी के साथ ही उत्तराखंड के हजारों जड़ी बूटी काश्तकारों का विशेष धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रस्तुति–प्रो.(डॉ.) के.एल.तलवाड़

अंतर्राष्ट्रीय संसदीय अध्ययन, शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, गैरसैंण–भराड़ीसैंण

जनभावनाओं के अनुसार चलने वाली शासन व्यवस्था को सबसे अच्छी शासन व्यवस्था माना जाता है इसलिए वर्तमान समय में सभी देश धीरे–धीरे लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था को अपनाते जा रहे हैं। स्वतंत्रता, समानता और जनभागीदारी को आधार बनाकर चलने वाली यह शासन व्यवस्था सम्पूर्ण विश्व में फैल गई है। यह एक ऐसी शासन व्यवस्था है जिसमें राज्य की सत्ता जनता के हाथ में होती है तथा जनता ही अपने प्रतिनिधियों का स्वयं चुनाव कर प्रतिनिधियों के माध्यम से शासन चलाती है। लोकतंत्र का सर्वव्यापी होने का एक मुख्य कारण यह भी है कि इसमें जनता के अधिकारों की उपेक्षा नहीं हो सकती है और जनता के मौलिक अधिकारों के साथ–साथ सरकार के कर्तव्यों का भी उल्लेख संविधान द्वारा स्पष्ट कर दिया जाता है। भारत के संविधान में भी जनता के मौलिक अधिकारों का उल्लेख जहां संविधान के भाग तीन में किया गया है वहीं भाग चार में सरकार के कर्तव्यों का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। लेकिन लोकतंत्र तब तक किसी राष्ट्र में मजबूत नहीं हो सकता है जब तक वहां की जनता उसे मन से आत्मार्पित न कर दे और प्रत्येक देश अपनी जनता में इस मन की स्वीकारोक्ति के लिए कई नये –नए प्रयास करता है उन्हीं प्रयासों में एक विचार युवा संसद का भी है।

युवा संसद एक ऐसी काल्पनिक क्रियाविधि है जिसमें युवा छात्र संसद या विधायिका के सदस्य बनकर उन्हीं की तरह सदन में बहस, चर्चा या कानूनी प्रक्रिया के प्रस्ताव पारित करते हैं। यह एक प्रतीकात्मक गतिविधि है लेकिन इससे न केवल छात्रों में लोकतान्त्रिक मूल्य, संसदीय प्रक्रियाओं की जागरूकता बढ़ती है बल्कि इससे राष्ट्र में लोकतंत्र तृणमूल तक पहुंचकर मजबूत आधारशिला के रूप में स्थापित होता है साथ ही इस शासन व्यवस्था के प्रति जनता में स्वीकारोक्ति भी बढ़ जाती है।

उत्तराखण्ड की ग्रीष्मकालीन राजधानी गैरसैंण, भराड़ीसैंण में स्थित अंतर्राष्ट्रीय संसदीय अध्ययन शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान लोकतंत्र और संसदीय समझ की आधारशिला को मजबूत करने के उद्देश्य से ही स्थापित किया गया है। इसकी स्थापना पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी की परिकल्पना पर की गई है। 18 मई 2015 को उत्तराखण्ड विधानसभा के एक विशेष सत्र को संबोधित करते हुए उन्होंने इस संस्थान की आवश्यकता महसूस की थी। 17 नवंबर 2016 को उत्तराखण्ड की विधानसभा ने संकल्प पारित किया तथा 23 मार्च 2019 को उत्तराखण्ड सोसायटी एक्ट में इस संस्थान का पंजीकरण करवाया गया। संस्थान का मुख्य उद्देश्य भारतीय लोकतंत्र की बुनियादी जड़ों को मजबूत करना तथा दुनियां में संसदीय

शासन व्यवस्था से जुड़े आयामों का अध्ययन और शोध कर जन–जन तक पहुंचाना है। यह संस्थान इस बात पर भी शोध कार्य करता है कि, किस प्रकार संसदीय लोकतंत्र को और मजबूत बनाया जा सकता है। विधायकों और जन प्रतिनिधियों को भी लोकतंत्र का प्रशिक्षण यह संस्थान प्रदान करता है। राजनीति से जुड़े शोधार्थियों के लिए यह संस्थान अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है जब वे आने वाले भविष्य में लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था की मजबूती के लिए नए–नए विषयों पर अपने शोध कार्य करेंगे।

उत्तराखण्ड की वर्तमान विधानसभा अध्यक्ष श्रीमती ऋतु भूषण खण्डूडी द्वारा 25 मार्च से 27 मार्च 2025 तक इस संस्थान में छात्र संसद का आयोजन करवाया गया। चमोली जनपद के विभिन्न महाविद्यालयों के 70 छात्र–छात्राओं ने इस छात्र संसद कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। महाविद्यालय गोपेश्वर, महाविद्यालय कर्णप्रयाग, महाविद्यालय गैरसैण, महाविद्यालय नंदासैंण आदि महाविद्यालयों के छात्र छात्राओं ने इस समारोह में उत्तराखण्ड की संस्कृति, परंपरा, खानपान, त्योहार आदि पर अपने विचार रखे। इस प्रतियोगिता के मुख्य विषय ऐंपण कला की महत्ता और संरक्षण, रम्माण महोत्सव का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व, उत्तराखण्ड में पाण्डव और छोलिया नृत्य की भूमिका, जागर और लोकगाथाओं का महत्व, उत्तराखण्ड की हस्तशिल्पकला का महत्व व संरक्षण, भोटिया जनजाति की वस्त्रकला बुनाई का महत्व, उत्तराखण्ड के लोकवाद्य यंत्रों का महत्व व संरक्षण, उत्तराखण्ड के पारंपरिक अनाजों की वर्तमान प्रासंगिकता, पारंपरिक व्यंजनों की उपयोगिता, तथा जड़ी बूटी व जैविक खेती का महत्व व संरक्षण आदि थे। सभी युवा विधायकों ने इन विषयों पर अपने अपने विचार रखे।

यह विधान सभा अध्यक्ष की एक अभिनव पहल थी जहां जनपद के छात्र छात्राओं को संसदीय समझ विकसित करने का मौका मिला। सीमांत जनपद के युवाओं, छात्रों और शिक्षकों को आने वाले समय में इस संस्थान की मदद से संसदीय व्यवस्थाओं पर शोध और प्रशिक्षण के उच्च अवसर मिलेंगे। इस संस्थान की मदद से आने वाले समय में शैक्षणिक पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा साथ ही युवाओं को रिसर्च प्रोजेक्ट, रिपोर्ट लेखन, डेटा संग्रह आदि में रोजगार के अवसर भी संस्थान प्रदान करेगा। इस संस्थान की मदद से आने वाले समय में चमोली की लोक संस्कृति, भाषा, पहनावा तथा पारंपरिक ज्ञान को अंतर्राष्ट्रीय मंच मिल सकता है।

उत्तराखण्ड की ग्रीष्मकालीन राजधानी में स्थित अंतर्राष्ट्रीय संसदीय अध्ययन शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान न केवल उत्तराखण्ड की संसदीय समझ तक सीमित है बल्कि यह भारत और विश्व की लोकतान्त्रिक समझ को और गहराई से समझने और उसे और मजबूत करने में अपनी सशक्त भूमिका निभायेगा। नए–नए शोधों के माध्यम से यह संसदीय जटिलताओं को कम करके विधायकों, सांसदों आदि को व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करेगा। यह संस्थान युवा संसद, जन संवाद, प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि के माध्यम से लोकतंत्र में नागरिक सहभागिता को भी बढ़ावा देगा। संस्थान के माध्यम से किए जाने वाले शोध और उनके परिणामों को को लोकनीति निर्धारण में शामिल किया जाएगा। निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं की यह संस्थान लोकतंत्र में जनता, जन प्रतिनिधियों, लोकनीति और नैतिकता के बीच एक मजबूत सेतु का कार्य करेगा।

प्रस्तुति–
कीर्तिराम डंगवाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
डॉ. शिवानन्द नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग

लोकहितकारी परिषद डोईवाला ने मेधावियों को किया सम्मानित

डोईवाला के प्रमुख सामाजिक संगठन लोकहितकारी परिषद द्वारा 30 मई को हिन्दी पत्रकारिता दिवस के अवसर पर क्षेत्र के हाईस्कूल व इंटरमीडिएट परीक्षा 2025 के मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। बतौर मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक बृजभूषण गैरोला ने इन विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि वे शिक्षा अर्जन के साथ नैतिक मूल्यों को भी जीवन में अवश्य अपनाएं। सम्मान पाने वाले विद्यार्थियों में सात्विक अरोड़ा, सौम्या जौहर, सिद्धार्थ जिंदल, उदिशा, माही,जसमीत कौर, ध्रुव काला, वैभव रणाकोटी, आईशा सलीम, पलक अरोड़ा, शौर्य जिंदल,साफिया,लक्ष्मी मंमगाईं, भागवती,आईशा व ईशिका सम्मिलित रहे। इसके अलावा कंप्यूटर शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए हरविंदर सिंह हैंसी, प्रतियोगी परीक्षाओं की कोचिंग के लिए रजनीश हल्दुआ,पत्रकार ज्योति यादव, लक्ष्मी अग्रवाल, आशीष यादव, प्रियांशु सक्सेना व बॉबी शर्मा को भी सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह में पूर्व राज्य मंत्री करन बोरा,पालिका अध्यक्ष नरेंद्र सिंह नेगी,परवादून बार एसोसिएशन के सचिव मनोहर सिंह सैनी,वरिष्ठ पत्रकार नवल किशोर यादव व लोकहित हितकारी परिषद के अध्यक्ष अश्विनी कुमार गुप्ता आदि मौजूद रहे।

प्रस्तुति-श्रीमती नीलम तलवाड़

पत्र लेखन

'ढाई आखर' प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

भारत सरकार संचार मंत्रालय डाक विभाग की ओर से राष्ट्रीय पत्र लेखन प्रतियोगिता 'ढाई आखर' आयोजित की गई। आज के डिजिटल युग में जहां नई पीढ़ी पत्र लेखन से दूर हो रही है,ऐसे में इस प्रतियोगिता के माध्यम से प्रदेश के विभिन्न विद्यालयों की प्रतिभाएं उजागर हुई हैं। चीफ पोस्ट मास्टर जनरल के अनुसार डाक विभाग प्रतिवर्ष अक्टूबर माह में 'ढाई आखर पत्र लेखन प्रतियोगिता' आयोजित करता है। यह प्रतियोगिता दो वर्गों –18 वर्ष से कम और 18 वर्ष से अधिक आयुवर्ग के लिए आयोजित होती है।

प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले प्रतिभागी डाक विभाग की ओर से दिए गए विषय पर अंतर्देशीय पत्र व लिफाफे में पत्र लिखते हैं। इस वर्ष राज्य भर से 22 हजार से अधिक प्रतिभागियों ने इन प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया। दो जून को प्रतियोगिताओं के परिणाम घोषित किये गए। 18 वर्ष से कम आयुवर्ग में अंतर्देशीय पत्र लेखन में दया सागर इंटर कॉलेज पिथौरागढ की साक्षी पांडे ने परिमंडल स्तर पर पहला और राष्ट्रीय स्तर पर तीसरा स्थान प्राप्त किया है। इसी आयुवर्ग में लिफाफा पत्र लेखन में कोटद्वार की शिया प्रथम रही। जबकि 18 वर्ष से अधिक आयुवर्ग में अंतर्देशीय पत्र लेखन में रानीधारा अल्मोड़ा के ललित मोहन सिंह प्रथम रहे और इस आयुवर्ग में लिफाफा पत्र लेखन में बालावाला देहरादून की स्मृति रावत को पहला स्थान मिला।

डाक विभाग द्वारा प्रथम,द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे प्रतिभागियों को चेक व प्रशस्तिपत्र देकर सम्मानित किया।

भोटिया जनजाति के वस्त्र व आभूषण : संस्कृति के संवाहक

जनपद चमोली में भोटिया जनजाति के पारंपरिक वस्त्र और आभूषण इनकी संस्कृति की विशेष पहचान हैं। यद्यपि अब इनके आभूषण और परिधान सामाजिक प्रकिया के कारण बदल रहे हैं। समय के साथ पारंपरिक आभूषण,परिधानों और वस्त्रों में जो बदलाव आया है, वह विभिन्न सामाजिक परिवर्तन कारकों की परस्पर क्रिया के कारण है, जो लोगों के परिधानों और वस्त्रों के चयन के दृष्टिकोण आवश्यकताओं,रूचि और प्राथमिकताओं को प्रभावित करते हैं। साथ ही समकालीन और आधुनिक आभूषण और परिधानों का मार्ग प्रशस्त किया, जिन्हें समाज में उत्सुकता से स्वीकार किया गया।पारंपरिक आभूषण और परिधान और वस्त्र इस प्रवृति से प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुए और अगली पीढ़ी में नहीं बल्कि पुरातन में चले गये है।

भोटिया जनजाति के आभूषण,वस्त्र और परिधान विलुप्ति की कगार पर हैं। लेकिन भोटिया जनजाति के आभूषण,वस्त्र–परिधान इनकी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। पुरुष और महिलाएं दोनों पारंपरिक वेशभूषा और आभूषण पहनते हैं, भोटिया जनजाति के पुरुष पारंपरिक रूप से ऊनी पोशाक पहनते हैं, जिसमे चोला , डोरा और टोपी शामिल है। महिलाओं की पारंपरिक पोशाक में छुपली,आंगड़ी,पाखी ,लांचरी, चोली, डोरा, सुथन और घुंडू शामिल हैं। वे अपनी वेशभूषा को सजाने के लिए सीप, कौड़ी और दर्पण जैसे विभिन्न आभूषणों का उपयोग करते हैं।

आभूषणों में पुरूष किसी भी अन्य प्रकार के आभूषण नहीं पहनते हैं। महिलाएं चंद्रहार, स्यूल,सांगल, कमरबंद, रानी अंगूठी,नथ, मांग टीका , झुमके, पौंजी और झंवर (पायल) शामिल हैं। वे अपने आभूषणों को सजाने के लिए चांदी , तांबा, और अन्य धातुओं का उपयोग करते हैं।

विलुप्ति के कारणः–

आधुनिकीकरण –

आधुनिक वस्त्रों और आभूषणों की उपलब्धता के कारण, पारंपरिक वस्त्रों और आभूषणों का प्रयोग कम हो गया है।

आर्थिक परिवर्तन –

आधुनिक जीवनशैली और आर्थिक परिवर्तनों के कारण, पारंपरिक वस्त्रों और आभूषणों को बनाए रखने में कठिनाई हो रही है।

प्रकृति से दूर होना –

भोटिया जनजाति के लोग अब प्राकृतिक संसाधनों पर कम निर्भर हैं, जिससे पारंपरिक वस्त्रों और आभूषणों को बनाने के लिए आवश्यक सामग्री की कमी हो रही है।

भोटिया जनजाति के पारंपरिक वस्त्र और आभूषण उनके सांस्कृतिक इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इनके संरक्षण के लिए प्रयास किए जा सकते हैं, स्थानीय समुदाय को प्रोत्साहित किया जा सकता हैं। ताकि वे अपने पारंपरिक वस्त्रों और आभूषणों को बनाए रखें और उन्हे अगली पीढ़ी तक पहुंचाएं।

प्रस्तुतिः
डा.रमेश चन्द्र भट्ट,विभागाध्यक्ष भूगोल, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग।

नवाचार

ग्राफिक एरा डीम्ड यूनिवर्सिटी

शोधार्थी रीतिका ने विकसित किया 'लिक्विड ट्री'

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर ग्राफिक एरा डीम्ड विश्वविद्यालय की रसायन विज्ञान विभाग की शोधार्थी रीतिका बगौली ने उत्तराखण्ड का पहला 'लिक्विड ट्री' (Algal Tree) विकसित किया है।इस कृत्रिम पेड़ को विश्व पर्यावरण दिवस पर ग्राफिक एरा विश्वविद्यालय परिसर में लगाया गया है। रीतिका का दावा है कि 'लिक्विड ट्री' एक जैविक, सोलर पावर्ड इनडोर–आउटडोर एयर प्यूरीफायर है,जो पेड़ों की तुलना में 20 गुना अधिक कार्बन डाई ऑक्साइड अवशोषित करता है और शुद्ध ऑक्सीजन छोड़ता है। यह प्लास्टिक और बायोवेस्ट से बनाया गया है,जिससे इसकी लागत भी कम है। एल्गल ट्री सूक्ष्म शैवाल की प्राकृतिक क्षमता का उपयोग करता है,जो कार्बन डाई ऑक्साइड को अवशोषित कर ऑक्सीजन उत्पन्न करता है। साथ ही यह शहरी क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए एक हरित विज्ञान–समर्थित समाधान प्रदान करता है।

इस प्रोटोटाइप का मॉडल आईएसबीटी परिसर में भी लगाया जा चुका है। इस अद्भुत पेड़ में आम जनता की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए बैठने के लिए बेंच,मोबाइल चार्जिंग की सुविधा और स्मार्ट स्ट्रीट लाइट जैसी रोशनी की व्यवस्था की गई है। इस परियोजना के माध्यम से विश्वविद्यालय ने यह उदाहरण प्रस्तुत किया है कि शैक्षणिक अनुसंधान और व्यावहारिक रसायन विज्ञान किस तरह जलवायु की बेहतरी के लिए नवाचार को बढ़ावा दे सकता है। रीतिका ने अपनी इस उपलब्धि के लिए डॉ.भावना बिष्ट, डॉ. हरीश चंद्र जोशी और विभागाध्यक्ष डॉ. अभिलाषा मिश्रा आदि से प्राप्त मार्गदर्शन के लिए आभार जताया है। ग्राफिक एरा विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. कमल घनशाला, कुलपति प्रो.नरपिंदर सिंह व प्रो. एम.पी.सिंह ने रीतिका के इस नवाचार के लिए बधाई दी।

प्रस्तुति–अमन तलवाड़

जीवन चन्द्र जोशी : चीड़ के पेड़ की छाल पर उकेर रहे अद्भुत कलाकृतियां

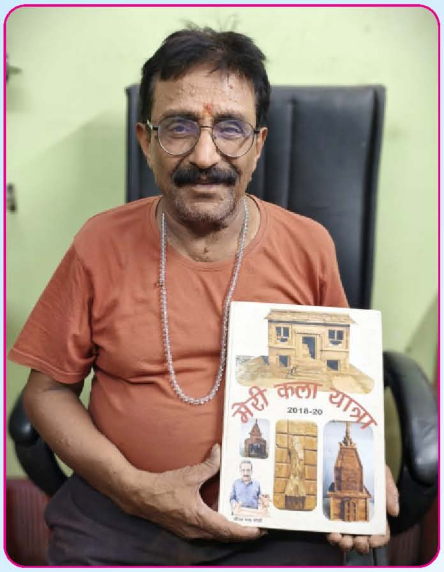

एक प्रमुख कथन है 'मंजिल उन्हीं को मिलती है,जिनके सपनों में जान होती है,पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।' इस बात को सच करके दिखाया है जीवन चन्द्र जोशी ने। बचपन से ही पोलियो दिव्यांग होने के बावजूद उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति और हुनर अपने आप में एक मिसाल है। मूल रूप से गल्ली जाखनदेवी अल्मोड़ा निवासी स्वर्गीय मोहन चन्द्र जोशी के पुत्र 65 वर्षीय जीवन चन्द्र जोशी वर्तमान में धुनी नंबर एक कठघरिया हल्द्वानी में अपनी दो बहनों निर्मला जोशी और ऊषा जोशी के साथ रहते हैं। बचपन में ही पोलियो हो जाने के कारण उनका जीवन संघर्षों से भरा रहा। पिछले 30 साल से चीड़ के पेड़ की छाल को तराशकर विभिन्न कलाकृतियां बनाने वाले वह अद्भुत कलाकार हैं।वह आजादी के 75 वें अमृत महोत्सव,योगासन,भारत का मानचित्र, तिरंगा झंडा,मंदिरों आदि की कलाकृतियां बना चुके हैं। खास बात यह है कि वह लोगों को प्रशिक्षित भी करते हैं और उद्योग केंद्र में वह मास्टर ट्रेनर के रूप में पंजीकृत भी हैं। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय सहित वह कई मंचों पर सम्मानित भी हो चुके हैं। यदि सरकारी मदद मिले तो वह कलाकृतियों की ट्रेनिंग का सेंटर भी खोलना चाहते हैं। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री ने अपने कार्यक्रम 'मन की बात' के 122 वें एपिसोड (25 मई 2025) में जीवन जोशी के संघर्ष की सराहना करते हुए कहा था कि पोलियो जीवन के हौसलों नहीं छीन पाया। उन्होंने जीवन जोशी के संघर्ष और हुनर की सराहना की।

कठघरिया हल्द्वानी में उन्होंने 'बगेट आर्ट एवं वुड क्राफ्ट ट्रेनिंग सेंटर' की स्थापना की है। गुनिया लेख स्थित सरकारी स्कूल के शिक्षक गौरीशंकर कांडपाल को वह अपना मार्गदर्शक मानते हैं,जिन्होंने इस कार्य में उनकी काफी सहायता की।

प्रस्तुति– डॉ.शिव दत्त तिवारी,सेवानिवृत्त प्रोफेसर (संयोजक–'प्राण वायु' अभियान)

फोटो सौजन्य – श्री आदित्य मुखर्जी,हल्द्वानी(नैनीताल)

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर विशेष

योग के माध्यम से एकजुट हो रहा विश्व

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक'

जब मन वश में होता है, इंद्रियाँ शांत होती हैं, और आत्मा परमात्मा का अनुभव करने के लिए भीतर की ओर मुड़ती है। वही योग की सच्ची अवस्था है।भारतीय दर्शन की अटूट परंपरा में, योग हमेशा से आत्मा की मुक्ति के उद्देश्य से की जाने वाली एक आध्यात्मिक प्रथा से कहीं अधिक रहा है। यह जीवन जीने का एक जीवंत, श्वास लेने वाला तरीका भी है जो दुनिया भर में शांति, स्वास्थ्य और सद्भाव को बढ़ावा देता है। जिस प्रकार पवित्र गंगा हिमालय से निकलकर पूरे भारत को पोषित करती है, उसी प्रकार योग भी भारत की ऋषि परंपरा से प्रवाहित होता है और अब अपनी कालातीत ज्ञान से पूरी दुनिया का पोषण कर रहा है।

कुछ साल पहले, यूक्रेन के कीव में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाते हुए, राजदूत मनोज भारती के साथ मैंने सार्वजनिक रूप से कहा था, 'आज, योग एक उत्सव है। कल, यह दुनिया भर में एक जन आंदोलन बन जाएगा।'

कीव के उस खुले मैदान में खड़े होकर, जब सैकड़ों यूक्रेनी नागरिक भक्ति और आनंद के साथ योग अभ्यास में शामिल हुए, तो यह मेरे लिए स्पष्ट था कि योग जल्द ही सीमाओं, धर्मों और राजनीति को पार कर मानव एकता की एक सार्वभौमिक अभिव्यक्ति बन जाएगा। अंतर्ज्ञान का वह क्षण अब एक वैश्विक वास्तविकता बन गया है। जैसा कि हम 2025 में 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मना रहे हैं, योग का अभ्यास लगभग 200 देशों में किया जाता है, जिसमें 44 इस्लामिक राष्ट्र भी शामिल हैं। यह केवल एक शारीरिक अनुशासन का प्रसार नहीं है – यह भारत की आध्यात्मिक विरासत का दुनिया को एक उपहार के रूप में उदय है। इस असाधारण परिवर्तन के केंद्र में भारत के दूरदर्शी नेता – प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी हैं। उनकी अटूट प्रतिबद्धता, वैश्विक दूरदर्शिता और गहरी सांस्कृतिक गर्व ने योग को एक प्राचीन परंपरा से एक आधुनिक वैश्विक चेतना आंदोलन में बदल दिया।

(वैदिक अग्नि अनुष्ठान), सामूहिक ध्यान, वैदिक मंत्रों का जाप और आंतरिक शांति तथा वैश्विक सद्भाव के मार्ग के रूप में वैदिक ज्ञान की शिक्षाएँ। लक्ष्य केवल आध्यात्मिक अभ्यास नहीं है, बल्कि सामूहिक मानव चेतना का पुनरुद्धार है – जहाँ व्यक्ति प्रकृति और ब्रह्मांड के साथ तालमेल बिठाता है। यह आंदोलन उसी लौ को आगे बढ़ाता है जो योग ने पूरी दुनिया में प्रज्ज्वलित की है।

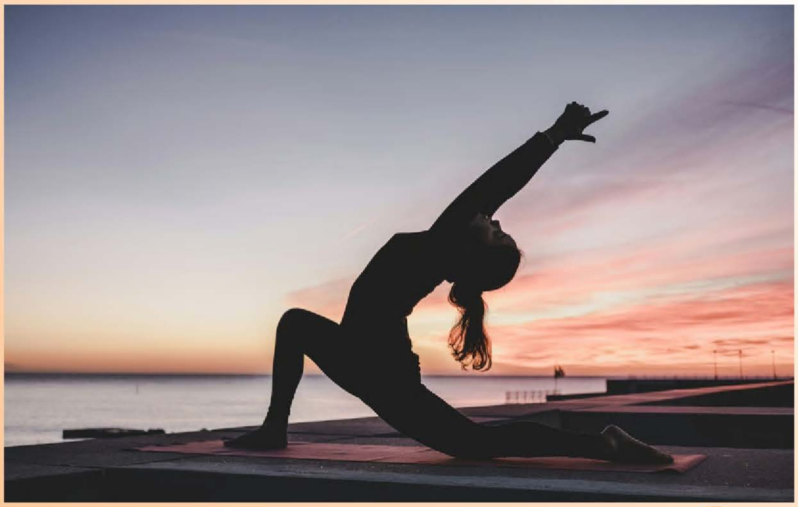

योग, आखिरकार, व्यक्ति तक ही सीमित नहीं है। इसके प्रभाव परिवारों, समुदायों, राष्ट्रों और अंततः पूरे ग्रह में फैलते हैं। यह संघर्ष पर करुणा, भोग पर आत्म–संयम, स्वार्थ पर सेवा सिखाता है। यही कारण है कि आज योग केवल व्यायाम का एक रूप नहीं है – यह वैश्विक चेतना का एक स्तंभ है।

जब हम इस वर्ष के योग दिवस के विषय 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग' पर विचार करते हैं, तो हमें याद दिलाया जाता है कि योग आंतरिक शुद्धता और

बाहरी स्थिरता के बीच का सेतु है। एक स्वस्थ पृथ्वी और एक स्वस्थ इंसान गहराई से जुड़े हुए हैं। योग वह कड़ी है जो इस संबंध में सामंजस्य बिठाती है, जीवन के लिए एक संतुलित, करुणामय और स्थायी दृष्टिकोण प्रदान करती है। प्राचीन हिमालयी गुफाओं से जहाँ संतों ने ध्यान किया था, संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक मंच तक, योग की यात्रा भारत की सॉफ्ट पावर की कहानी है – शांत, गहरी और परिवर्तनकारी।

आज, योग और वेदों के माध्यम से, भारत एक बार फिर विश्वगुरु – एक वैश्विक शिक्षक – के रूप में उभर रहा है। यह केवल गर्व का क्षण नहीं है, बल्कि जिम्मेदारी का आह्वान भी है। आइए हम केवल योग का जश्न न मनाएं – आइए हम इसे जिएं। आइए हम इसे आत्मसात करें। क्योंकि योग आसनों की एक श्रृंखला नहीं है, यह स्वयं से परम तक की एक मौन यात्रा है। वेद केवल ग्रंथ नहीं हैं बल्कि शांति और सार्वभौमिक बुद्धि की जीवंत कंपन हैं। प्रधान मंत्री मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व के कारण, भारत आज केवल एक तकनीकी और आर्थिक शक्ति नहीं है, बल्कि दुनिया के लिए एक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक प्रकाश है। एक ऐसा प्रकाश जो बल से नहीं, बल्कि जागरण से मार्गदर्शन करता है – जो विजय से नहीं, बल्कि जुड़ाव से प्रेरित करता है। यह भारत का संदेश है–शाश्वत, निस्वार्थः और सार्वभौमिक। आइए! दुनिया योग के माध्यम से उठे, श्वास ले और एकजुट हो।

(लेखक भारत के पूर्व शिक्षा मंत्री और उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हैं।)

उपलब्धि

एसजीआरआर विश्वविद्यालय

योग छात्र उत्तम अग्रहरी ने बनाया राष्ट्रीय ताड़ासन रिकॉर्ड

श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय के योग विज्ञान और प्राकृतिक चिकित्सा के छात्र उत्तम अग्रहरी ने एक राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया है। आज, वह ताड़ासन के लिए 3 घंटे और 3 मिनट तक खड़े रहे। यह रिकॉर्ड इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में पंजीकृत किया गया है। प्रतिनिधि, इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स, डॉ. श्वेता झा की उपस्थिति में, यह राष्ट्रीय रिकॉर्ड स्थापित किया गया था। श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय के अध्यक्ष महंत देवेंद्र दास, कुलपति (प्रोफेसर) कुमुद सकलानी और रजिस्ट्रार डॉ. लोकेश गंभीर ने उत्तम अग्रहरी को इस उपलब्धि पर बधाई दी। इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स की एक सामान्य संस्था है। इसका प्रधान कार्यालय वियतनाम में है, जबकि इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स का प्रधान कार्यालय फरीदाबाद, हरियाणा में है। आज तक, 40,000 रिकॉर्ड हैं जो इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा पंजीकृत किए गए हैं।

यह उल्लेखनीय है कि स्कूल ऑफ योगिक साइंस एंड नेचुरोपैथी, एसजीआरआरयू के छात्रों ने अतीत में ऐसे कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाए हैं। उत्तम अग्रहरी श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय से एम.एससी., योग विज्ञान और वैकल्पिक चिकित्सा का कोर्स कर रहे हैं। डीन, स्कूल ऑफ योगिक साइंस एंड नेचुरोपैथी, डॉ. कंचन जोशी ने बताया कि उत्तम अग्रहरी योग के एक होनहार छात्र हैं। उत्तम अग्रहरी को उनकी प्रतिभा के लिए महंत देवेंद्र दास, श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय द्वारा सम्मानित किया गया है, जो उत्तम अग्रहरी की शिक्षा की जिम्मेदारी उठा रहे हैं। उनके रहने और भोजन की व्यवस्था भी विश्वविद्यालय के प्रबंधन द्वारा की जा रही है। इस अवसर पर अध्यक्ष डॉ. मालविका सती कांडपाल, डॉ. सुरेंद्र प्रसाद रयाल, डॉ. सरस्वती काला, डॉ. अनिल थापलियाल, डॉ. बिजेंद्र सिंह, डॉ. प्रेरणा और डॉ. ओम नारायण तिवारी भी उपस्थित रहे।

प्रस्तुति प्रो.(डॉ.) के.एल.तलवाड़

पितृ दिवस बनाम पितृ पक्ष : क्या हिंदू जीवन को वास्तव में एक पश्चिमी अवधारणा की आवश्यकता है ?

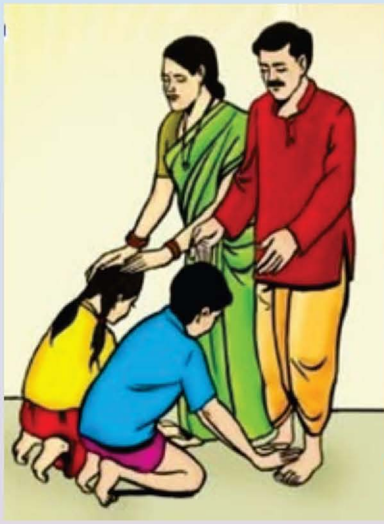

हमने 15 जून, 2025 को पितृ दिवस मनाया है, जिसमें पिताओं के प्रति प्रेम और प्रशंसा की व्यापक अभिव्यक्ति देखने को मिलती है, मैं हिंदू संदर्भ में इसकी वास्तविक अनुनाद पर विचार कर रहा हूँ। यह चिंतन विशेष रूप से पितृ पक्ष की गहन और प्राचीन परंपरा के साथ तुलना करने पर और भी मार्मिक हो जाता है।

जबकि पितृ दिवस, जिसकी उत्पत्ति 20वीं शताब्दी की शुरुआत में अमेरिका में हुई थी, एक सुंदर अवधारणा है – पिता, पितृ–तुल्य व्यक्ति आदि को स्वीकार करने और उनकी सराहना करने का एक समर्पित दिन – एक गहन आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध हिंदू जीवन में इसकी आवश्यकता एक सूक्ष्म परीक्षण की मांग करती है। क्या हिंदू दर्शन पहले से ही पितृ वंश का सम्मान करने के लिए एक अधिक व्यापक, शायद शाश्वत, ढाँचा प्रदान नहीं करता है?

हिंदू धर्म, अपने मूल में, पूर्वजों के प्रति श्रद्धा को अपने ताने–बाने में अंतर्निहित करता है। यह पितृ पक्ष (पूर्वजों का पखवाड़ा) के पालन में सबसे स्पष्ट रूप से व्यक्त होता है। पितृ दिवस के एक दिवसीय फोकस के विपरीत, पितृ पक्ष 16 दिनों की अवधि होती है, जो आमतौर पर हिंदू चंद्र मास भाद्रपद (सितंबर–अक्टूबर) में पड़ती है, जो सभी दिवंगत पूर्वजों के लिए श्राद्ध अनुष्ठान करने के लिए समर्पित होती है।

एक दिन से परे – श्रद्धा का हिंदू तरीका

दोनों के बीच का अंतर गहरा है। पितृ दिवस जीवित पिता का सम्मान करता है, जो उनकी वर्तमान में किए गए प्रयासों और प्रेम को स्वीकार करने के लिए एक सराहनीय और महत्वपूर्ण प्रथा है। हालांकि, पितृ पक्ष लौकिक से परे है। यह दिवंगत लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करने, हमारे अस्तित्व में उनके योगदान को स्वीकार करने और परलोक में उनकी आध्यात्मिक भलाई सुनिश्चित करने का समय है। यह एक चुकाया गया ब्रह्मांडीय ऋण है, कृतज्ञता का एक निरंतर चक्र है जो एक व्यक्ति के जीवनकाल से कहीं आगे तक फैला हुआ है। पितृ पक्ष के पीछे का दर्शन ऋण की अवधारणा में गहराई से निहित है। इनमें पितृ ऋण (पूर्वजों का ऋण) सर्वोपरि माना जाता है। तर्पण (जल और तिल का अर्पण) और पिंडदान (चावल के गोले का अर्पण) जैसे अनुष्ठानों के माध्यम से, हिंदू अपने पूर्वजों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और उनसे आशीर्वाद मांगते हैं, जिससे उच्च लोकों की उनकी यात्रा और, विस्तार से, जीवित पीढ़ियों की समृद्धि और भलाई सुनिश्चित होती है। यह केवल स्मरण के बारे में नहीं है। यह ब्रह्मांडीय व्यवस्था में सक्रिय आध्यात्मिक भागीदारी के बारे में है।

जीवितों का सम्मान – पैतृक श्रद्धांजलि का एक अंतर्निहित परिणाम

यह समझना महत्वपूर्ण है कि पितृ पक्ष के दौरान पूर्वजों के प्रति दिखाया गया गहरा सम्मान जीवित माता–पिता के प्रति हिंदुओं के प्रेम और सम्मान को कम या नकारता नहीं है। इसके विपरीत, यह इसे सुदृढ़ करता है। उदाहरण के लिए, जब एक माँ अपने बेटे को अपने दिवंगत पिता के लिए श्राद्ध अनुष्ठान करते देखती है, तो यह एक शक्तिशाली मनोवैज्ञानिक प्रभाव पैदा करता है। वह प्रत्यक्ष रूप से देखती है कि उसका बेटा अपने वंश का सम्मान करता है और, विस्तार से, उसके निधन के बाद भी उसे संजोना और सम्मान देना जारी रखेगा। यह अपार सांत्वना और सुरक्षा की भावना प्रदान करता है। यह अत्यधिक संभावना नहीं है कि कोई व्यक्ति जो अपने पूर्वजों के लिए अनुष्ठान सावधानीपूर्वक करता है, वह अपने जीवित माता–पिता के प्रति अत्यधिक सम्मान और देखभाल नहीं करेगा। जिन्होंने पहले जन्म लिया, उनका सम्मान करने का कार्य ही कर्तव्य, कृतज्ञता और पारिवारिक भक्ति की गहरी भावना को विकसित करता है जो सभी जीवित

बुजुर्गों तक फैली हुई है। इसके अलावा, माता–पिता के प्रति हिंदू श्रद्धा एक दिन तक सीमित नहीं है, बल्कि दैनिक जीवन और शास्त्र सम्मत शिक्षाओं में निहित है। संस्कृत वाक्यांश 'मातृ देवो भव, पितृ देवो भव' (आपकी माता आपके लिए ईश्वर के समान हों, आपके पिता आपके लिए ईश्वर के समान हों) एक मौलिक सिद्धांत है, जो इस बात पर जोर देता है कि माता–पिता को दिव्य आकृतियों के रूप में पूजा जाना चाहिए। यह साल में एक बार की भावना नहीं है, बल्कि सम्मान, आज्ञाकारिता और सेवा का एक सतत दृष्टिकोण है।

एक सर्व–समावेशी संबंध तत्काल परिवार से परे

श्राद्ध और पितृ पक्ष पूजा का दायरा केवल किसी के पिता से कहीं अधिक विस्तृत है। इसमें सभी पूर्वज और रिश्तेदार शामिल हैं, जिनमें माताएं, नाना–नानी और दादा–दादी, चाचा–चाची, और यहां तक कि वे लोग भी शामिल हैं जिनसे किसी को गहरा संबंध महसूस हुआ हो, जैसे कि प्यारे पालतू जानवर या करीबी दोस्त। यह विस्तृत समावेशिता अंतर–जुड़ाव और सम्मान और कृतज्ञता की सार्वभौमिक प्रकृति की हिंदू समझ को उजागर करती है। यह उन सभी लोगों की आध्यात्मिक स्वीकृति है जिन्होंने किसी के जीवन को छुआ है, जो अस्तित्व की समृद्ध टेपेस्ट्री में योगदान करते हैं।

तो, जबकि पितृ दिवस एक प्यारा भाव है, जो अक्सर बढ़ती व्यावसायिक गतिविधि और सोशल मीडिया के प्रचार का कारण बनता है, कोई यह तर्क दे सकता है कि एक हिंदू के लिए, इसकी विशिष्ट 'आवश्यकता' शायद अनावश्यक है। हिंदू विश्वदृष्टि पहले से ही पितृ आकृतियों, जीवित और दिवंगत दोनों, को एक सतत आध्यात्मिक और सांस्कृतिक अभ्यास के माध्यम से सम्मानित करने की एक मजबूत और समग्र प्रणाली को समाहित करती है। यह पितृ दिवस के पीछे की हार्दिक मंशा को कम करना नहीं है। यह पश्चिमी समाजों में पिताओं को रुकने और उनकी सराहना करने के लिए एक सुंदर अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है। हालांकि, एक हिंदू के लिए, पिता, और वास्तव में पूरे पैतृक वंश का सम्मान करना, उनके धर्म, उनके कर्तव्य और उनकी आध्यात्मिक यात्रा का एक अंतर्निहित हिस्सा है। यह कृतज्ञता और संबंध की एक सतत, विकसित प्रक्रिया है जो एक एकल कैलेंडर दिवस की सीमाओं से कहीं अधिक है। एक हिंदू जीवन में, हर दिन, संक्षेप में, पितृ सिद्धांत का सम्मान करने का एक अवसर है, जिससे एक अलग 'पितृ दिवस' श्रद्धा की पहले से ही समृद्ध टेपेस्ट्री के लिए एक सुखद लेकिन अंततः गैर–आवश्यक अतिरिक्त बन जाता है।

प्रस्तुति -डॉ. दिलीप वैष्णव
सहायक प्रोफेसर, न्यायिक चिकित्सा
एवं विष विज्ञान विभाग

विश्व पर्यावरण दिवस–5 जून

पौधरोपण की शुरुआत करें अपने घर-आंगन से : प्रो.तलवाड़

विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर 'साईं सृजन पटल' के संयोजक प्रो. के.एल. तलवाड़ ने कहा कि अपने घर–आंगन से ही पौधारोपण की शुरुआत करें। कहा गया है कि 'चेरिटी बिगिन्स एट होम' अर्थात अच्छे काम की शुरुआत घर से ही करनी चाहिए। पेड़ लगाने से न केवल हरियाली बढ़ती है,बल्कि यह जैव विविधता को भी संरक्षित करता है। पेड़ पशु–पक्षियों को भी प्राकृतिक आश्रय प्रदान करते हैं। पेड़ ही हमारी धरती के आभूषण हैं,जो वातावरण को ताजगी और शुद्धता देते हैं। पेड़ आक्सीजन का सबसे प्रमुख स्रोत है,जो हमे जीवन की मूलभूत आवश्यकता प्रदान करता है।

जन्म दिन, विवाह वर्षगांठ और अन्य शुभ अवसरों पर अपने घर पर एक पेड़ अवश्य लगाना चाहिए। उपहार स्वरूप भी एक छोटे गमले में लगा पौधा ही भेंट करना चाहिए। उल्लेखनीय है कि 'साईं कुटीर' परिसर में विभिन्न प्रजातियों के फूलों–फलों और औषधीय पेड़ लगाये गये हैं। 'प्राण वायु' अभियान के संयोजक सेवानिवृत्त प्रोफेसर डा.एस.डी.तिवारी ने हल्द्वानी से अपने संदेश में 'साईं कुटीर परिसर' को 'आक्सीजन पार्क' की संज्ञा दी है। श्रीमती नीलम तलवाड़ और अक्षत नित्य प्रति इन पेड़–पौधों की देखभाल करते हैं।